मगही साहित्य के इतिहास–एगो छोट परिचय

(क) काल–विभाजन आउ नामकरन

काल–विभाजन नामकरन करना टेढ़ी खीर हे। तइयो विद्वान एकरा पर जम के कलम चलयलन हे तथापि आज के वैग्यानिक जुग में भी ऊ सर्वसम्मत हल खोजे में असफल रहलन हे। एक–एक विसय पर उनकर मत–मतान्तर एकर परमान हे। एकर परमुख कारन हे–साहित्यकार के अप्पन–अप्पन मनोवीरती। हर काल में हर तरह के रचना होवित आयल हे। परिनाम ई होवऽ हे कि ओकरा कोई निस्चित सीमा में न बाँधल जा सकऽ हे।

हिन्दी में काल–विभाजन आउ नामकरन ढेरमनी लोग कइलन हे। एकरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ० श्याम सुंदर दास, डॉ० नगेन्द्र आदि परमुख हथ। डॉ० नगेन्द्र अप्पन इतिहास ग्रंथ में काल–विभाजन आउ नामकरन करित समय एकर समस्या पर परकास डाललन हे। फिनु एकर अधार के निम्न विन्दु में प्रस्तुत कयलन हे।

1. ऐतिहासिक काल क्रम के अनुसार–आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल।
2. सासन आउ ओकर सासन काल के अनुसार–एलिजाबेथ जुग, मराठा काल, विक्टोरिया जुग।
3. लोक नायक आउ ओकर परभाव काल के अनुसार–चैतन्य काल (बंगला), गाँधी जुग (गुजराती)।
4. साहित्य नेता आउ ओकर परभाव परिधि के अनुसार–रवीन्द्र जुग, भारतेन्दु जुग।
5. रास्ट्रीय, समाजिक अथवा सांस्कृतिक घटना या आंदोलन के अधार पर–भक्तिकाल, पुनर्जागरण काल, सुधार काल।
6. साहित्यिक परवीरती के नाम पर–रोमानी जुग, छायावाद जुग, रीतिकाल।

अब प्रस्न उठऽ हे कि मगही साहित्य के हिन्दी साहित्य से का लेना–देना हे? उत्तर हे कि मगही साहित्य के इतिहास के हिन्दी साहित्य के इतिहास से अलग करके न देखल जा सकऽ हे काहे कि मगध भी हिन्दुस्तान के एगो अंग हे।

इहो विचार के बात हे कि काल–विभाजन के सही अधार का हे? एकर सही उत्तर ई हो सकऽ हे कि काल–विभाजन के अधार भी सही परकीरती आउ परवीरती होवऽ हे। परकीरती आउ परवीरती से तात्पर्य जन–चेतना से हे। नामकरन भी बहुत हद तक काल–विभाजन के अनुगामी हे। सही नामकरन के सार्थकता तब होवऽ हे जब ऊ वस्तु के गुन, स्वभाव, धर्म, रंग आदि के अनुरूप होय।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल अप[illegible] ग्रंथ में हिन्दी साहित्य के काल–विभाजन आउ नामकरन करित लिखऽ हे "जिस काल खंड के भीतर किसी विशेष प्रकार की रचनाओं की प्रचुरता दिखलाई पड़े तो उसका नामकरण उन्हीं रचनाओं में प्रदर्शित प्रधान प्रवृति के आधार पर किया जाय।"

उपर्युक्त दुन्नो विद्वान के मत के देखे पर स्पस्ट होवऽ हे कि दुन्नो के मत में पर्याप्त समानता हे। दुन्नो साहित्यक परवीरती के नामकरन के परमुख अधार बतयलन हे। दुन्नो में भिन्नता ई बात के लेल हे कि जहाँ आचार्य शुक्ल रचना के प्रचुरता आउ ओकर परसिद्धि के अधार मान के नामकरन कयल चाहऽ हथ हुँआ डॉ० नगेन्द्र ओकरा ला केतना विकल्प के नाम गिनावऽ हथ।

मगही साहित्य के काल–विभाजन आउ नामकरन करित समय हम उपर्युक्त तर्क के ही अधार ग्रहन कयल उचित समझऽ ही काहे कि मगही साहित के हिन्दी साहित्य से घनिस्ठ संबंध हे आउ एकरा अलग से देखना हम्मर भूल होत। प्राय: विद्वान लोग सरहपाद के ही मगही के पहिला कवि मानलन हे। तब मगही के स्थापित करे के सरेय सरहपाद के जाहे। मगही साहित्य के विस्तृत काल के हम निम्नलिखित भाग में बाँट सकऽ ही—

(1) स्थापित काल – 700 ई० से 1500 ई० तक।

(2) भक्तिकाल – 1500 ई० से 1800 ई० तक।

(3) परवर्तीकाल – 1800 ई० से आज तक।

पुन: परवर्ती काल के हम तीन चरन में बाँटऽ ही–

(क) पहिला चरन – 1800 ई० से 1900 तक –अन्वेसन–सर्वेच्छन काल।

(ख) दूसरा चरन – 1900 ई० से 1947 ई० तक –जागरन काल।

(ग) तीसरा चरन – 1947 ई० से आज तक –विकास काल।

1. स्थापित काल–(लगभग 700 ई० से 1500 ई० तक

पूर्वी प्राकृत के ही मागधी कहल जा हे। ई पुरनका मगध परदेस के राजभासा, रास्ट्रभासा आउ जनभासा तीनो हल। मगही भासा आउ साहित्य के पहिला काल 'स्थापित काल' हे। एकरा दोसर नाम से न पुकारल जा सकऽ हे काहे कि मगही साहित्य के स्थापित होवे में काफी समय, मेहनत आउ सक्ति लगल हे। राहुल जी के बाद ई काल के विसद बिसलेसन करे के सरेय आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के जा हे। राहुल जी नियन इहो ओकरा विस्तृत फलक से देखलन हे। एकर कारन हे कि ई अपभ्रंस साहित्य के उद्भट विद्धान हलन। श्री रास विहारी पाण्डेय आचार्य शुक्ल के कयल काल–विभाजन के अधार पर मगही साहित्य के काल–विभाजन कयलन हे। ऊ ई काल खंड के नामकरन चारन काल आउ समय निर्धारन 1200 ई० से 1500 ई० तक कयलन हे। ई हास्यास्पद लगऽ हे काहे कि एकरा से सिद्ध कवि के वानी ही न छुटऽ हे बलुक अमीर खुसरो के गीत, पहेली, मुकरी आदि से भी मुँह मोड़े पड़ऽ हे। जबकि आदि साहित्य में इनकर उचित स्थान, मान आउ सम्मान हे। दोसर बात इहो हे कि एकरा से इतिहास के काल–क्रम के भी उल्लंघन होवऽ हे काहे कि हमरा लाचार हो के पांच सौ बरिस पीछे मुड़े पड़ऽ हे। अलबता प्रो० राम बुझावन सिंह के कयल वर्गीकरन आउ समय–निर्धारन कुछ हद तक सही लगऽ हे। प्रो० राम बुझावन सिंह ई काल के नामकरन आदिकाल (सिद्धकाल) कयलन हे आउ समय 8वीं से 12वीं सदी तक निर्धारित कयलन हे। पर इहो में व्याप्ति दोस हे काहे कि अमीर खुसरो के रचना के साथ अन्याय हो रहल हे। इनकर आदिकाल नामकरन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुकरन हे। हिआँ एक बात साफ झलकऽ हे हिन्दी साहित्य के 'आदिकाल' से मगही साहित्य के 'आदिकाल' में अंतर हे। हिन्दी साहित्य में तो आदिकाल से साहित्य रचना के एगो लंबा परम्परा चल पड़ल हे बाकि मगही साहित्य में जम के रचना भेल। हजारो लोकगीत रचल गेल जे आज भी मगध के नारी कंठ में बसल हे। लोकगाथा, लोक नाच गीत से मगही के भंडार भर गेल। बौद्ध आउ जैन धरम के कई गो पुस्तक तइयार भेल जेकर झंडा महादेस में फहरायल।

ई में दू मत न हे कि सहजयान में विभक्त बौद्ध सम्प्रदाय के आदि अधिस्ठाता सरहपाद हलन जे तत्कालीन समाज में व्याप्त अंधविस्वास आउ धार्मिक आडम्बर के फैलाव पर अंकुस लगयलन हल। नाथ साहित्य के योगदान भी मगही साहित्य के

स्थापित करे में कम न हे। सिद्ध के वाममार्गी भोग प्रधान योग–साधना के प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में नाथ पंथियन के हठयोग–साधना आरंभ होल हल। आदिकाल के नामकरन में जैन साहित्य के महत्व भी कमतर न हे। जैन साधु भी अप्पन धर्म के परचार–परसार ला मगही साहित्य के रचना कयलन हल।

स्थापित काल कहे से न खाली ऊ मगही के स्थापना के वाचक होवऽ हे बलुक इतिहास के संरच्छक भी साबित होवऽ हे। दोसर बात ई हे कि एतना लंबा अंतराल में मगही पर पड़ल दू परमुख परभाव के भी समंजन होवऽ हे। मानव अप्पन सफल अभिव्यक्ति ला लोक भासा के सहारा लेवऽ हे काहे कि सिस्ट आउ सुसंस्कृत भासा में ओकर भाव हूबहू चित्रित न होवऽ हे। मगध क्षेत्र से बौद्ध धर्म के संदेस देस–विदेस तक फैलल हल।

2. भक्ति काल (1500 ई० से 1800 ई० तक)

मगही साहित्य-के काल–विभाजन में दोसर काल खंड हे–भक्तिकाल। मगही साहित्य से लेके अन्य साहित्य में भी ई काल–खंड के नामकरण निर्विरोध रूप में भक्ति काल कयल गेल हे। ई कारन से जदि ग्रंथ के परमुखता आउ ई काल के परमुख परवीरती के लिहाज से एकरा भक्तिकाल कहल जाय तऽ अत्युक्ति न होत। हिन्दी साहित्य में भी जहाँ विद्वानगन विभिन्न काल–खंड के विभिन्न नाम से पुकारलन हे वहाँ भक्तिकाल के नाम पर सब एकमत हथ। एकर एकमात्र कारन काव्यात्मक परवीरती हे। अइसन बात न हे कि भक्तिकाल में सिंगारपरक रचना न भेल हे। बाकि सत्य तो ई हे कि ई सिरिंखला के कड़ियन बीच–बीच में टूटित रहल हे फिनु लोकमानस के सजीव भावना भक्तिपरक रचना दन्ने अग्रसर होवित रहल हे।

भक्तिकाल के सीमांकन 1500 ई० से 1800 ई० तक कयल गेल हे। एकर कारन हे—बौद्ध धर्म के मगध में पतन आउ शंकराचार्य के अद्वैतवाद के धीरे–धीरे जड़ जमाना। मगध के राजा पुष्यमित्र बौद्ध भिच्छु आउ परचारक के जमके कत्लेआम करलक जेकर कारन बौद्ध धर्म कमजोर हो गेल। दूसर कारन हो सकऽ हे–एक से बढ़ के एक मुस्लिम आक्रमनकारियन के मगध परदेस पर आक्रमन, लूट–पाट, कत्लेआम, अपहरन आउ बलत्कार। इतिहास गवाह हे कि एक समय एगो मुस्लिम आक्रमनकारी नालंदा वि० वि० के पुस्तकालय में आग लगा देलक जेकरा में मगही के विसाल पुस्तक भंडार जल के राख हो गेल। कहलो गेल हे कि

जेकरा गुलाम बनाना हे पहिले ओकर भासा, साहित्य, संस्कीरती के नस्ट कर दऽ। कुछ विद्वान इहे कारन के प्रमुख मानऽ हथ बाकि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार एकरा से भिन्न हे। द्विवेदी जी एकर प्रादुर्भाव एकाएक न मानऽ हथ। उनकर मान्यता हे कि एकरा ला सैकड़ों बरिस पहिले से मेघ खंड एकत्र हो रहल हल। ई तरह भक्ति के उदय से संबंधित डॉ० ग्रियर्सन आउ पच्छिमी विद्वान के ई मत कि भक्ति आंदोलन ईसाई परभाव के परिनाम हे, निराधार लगऽ हे।

भक्तिकाल में चाहे जेतना परकार के भी रचना होल होय पर सबके अंत: स्थल में भक्ति के साम्राज्य छायल हे। मुसलमानी सलतनत के साथ-साथ छुटभइया हिन्दू राजा के मनोरंजनार्थ जे मगही काव्य लिखल गेल, सच हे कि आज मगही साहित्य में ओकरा पर स्वतंत्र पुस्तक अनुपलब्ध हे। तइयो मगही भासा–भासी करोड़ो जनता के दिलोदिमाग आउ ओकर जिह्वा पर ऊ विरजमान हे।

हिन्दी साहित्य में गद्य–काव्य के विकास भले ही आधुनिक काल में होल हे बाकि मगही साहित्य में ई भक्तिकाल से उच्चासन पर हे। हिन्दी के साथ–साथ मराठी, गुजराती आदि भासा के भक्तिकालीन कवियन में उपलब्ध मगही सबद के अधार पर हम ई निस्कर्स पर पहुँचऽ ही कि मगही भासा के रूप–रेखा सगरो फैल चुकल हल। ई दुर्भाग्य मगही भासा के हे जे एकर कवि के रचना आज इतिहास से गायब हो गेल जबकि अवधी के तुलसीदास, ब्रजभासा के सूरदास आदि लोकभासा के कवि इतिहास में अप्पन जड़ जमउले हथ।

गौरवसाली मगध साम्राज्य के परभाव छेत्तर में आवेवाला परदेस के भासा भी मगही हल। मगध साम्राज्य के पतन के बाद मगही भासा में रचल साहित्य पर सब हक जमा के अपना लेलन आउ अपना सिद्ध कर देलन। भक्तिकाल में ही मगही भासा में ढेरो संस्कार गीत भी लिखल गेल हल जे आजो सुनाई पड़ऽ हे।

3. परवर्ती काल (1800 ई० से आज तक)

मगही साहित्य के काल–विभाजन में तीसरा आउ अंतिम काल खंड हे–परवर्ती काल। परवर्ती काल के तीन चरण में बाँटल गेल हे—

(क) पहिला चरन—अन्वेसन–सर्वेच्छन काल :— प्रथम चरन के समय–निर्धारन 1800 ई० से 1900 ई० तक आउ नामकरन अन्वेसन–सर्वेच्छन काल कयल गेल हे। एकर कारन हे कि ई काल में मगही में अनेक परिवर्तन होल।

गुलाम भारत पर अंग्रेजी हुंकूमत के ई काल हे। ई काल में अंग्रेजी सासक द्वारा मगही भासा पर महत्वपूर्ण कार्य करावल गेल। विसेसकर डॉ० ग्रियर्सन के योगदान के भुलावल न जा सकऽ हे। डॉ० ग्रियर्सन अप्पन पुस्तक–'बिहारी भासा के बोली आउ उपबोली और उपबोलियों के सात व्याकरण', 'ए कम्परेटिभ डिक्सनरी ऑफ दि बिहारी लैंग्वेज, 'भारत के भासा–सर्वेक्षण' आदि में मगही भासा आउ ओकर बोलियन के सर्वेच्छन कयलन। एतने न, ऊ बिहारी नामकरन के अंतर्गत भोजपुरी आउ मैथिली के साथ मगही के रख के ओकरा अस्तित्व परदान कयलन। डॉ० ग्रियर्सन के सर्वेच्छन से मगही के सर्वाधिक लाभ होल। मगही के इतिहास, भूगोल तथा दोसर बोलियन से स्थापित संबंध आज जे कुछ भी परकास में हे, एकर सारा सरेय डॉ० ग्रियर्सन के जा हे। अगर अप्पन अन्वेसन–सर्वेच्छन से ई मगही पर एतना उपकार न करतन हल तऽ आज मगही के अप्पन अस्तित्व लेल संघर्स करे पड़ित हल। ई दृस्टि से भी ई प्रथम चरन के नामकरन अन्वेसन–सर्वेच्छन काल ही उचित हे।

(ख) दुसरा चरन–जागरनकाल—द्वितीय चरन के समय निर्धारन 1900 ई० से 1947 ई० तक आउ नामकरन जागरनकाल कयल गेल हे। मगही भासा के सर्वेच्छन होला के बाद मगही भासा में रचनात्मक काम करे के ललक मगधवासियन में होल। तब कुछ साहित्य लिखाय लगल। पर ई काल भी साहित्य सिरजन के दृस्टि से अत्यंत समृद्ध काल न कहल जा सकऽ हे। सच तो ई हे कि ई परयास काल हे। जागृति अयला से अत्यल्प साहित्य लिखायल। हाँ, ई काल जमींदारी प्रथा के काल हल। जमींदारी के रोकड़ बही आउ चिट्ठी–पतरी मगही भासा आउ एकर कैथी लिपि में जरूर लिखल जाय लगल।

देस के आजादी ला छटपटाहट भी इहे काल से सुरू होल। फलतः मगही भासा में देसगान आउ रास्ट्रीय गीत लिखल आउ गावल जाय लगल। कुछ भक्ति के पद भी लिखायल। कवि लोग कविता के माध्यम से समाजिक कुरीति पर भी परहार करे लगलन। ई से एगो नयका जागरन मगही भासा में होल। तब हम ई काल के जागरनकाल जरूर कह सकऽ ही। ई स्थिति स्वतंत्रता प्राप्ति के समय 1947 ई० तक रहल।

(ग) तीसरा चरन–विकास काल (1947 ई० से आज तक)—परवर्ती काल के तीसरा चरन के नामकरन कयल गेल हे–विकास काल आउ एकर समय

निर्धारित कयल गेल हे–1947 से आज तक। दोसर सबदन में हम कह सकऽ हा कि ई काल अजादी के बाद के काल हे। ई काल के परिवेस आउ परिस्थिति देस के अजाद होते बदल गेल। पहिले अजादी पावे ला अंगरेज से लोग लड़ऽ हलन बाकि देस के अजाद होते सब भासा के लोग अप्पन–अप्पन भासा के आगे बढ़ावे ला आंदोलन करे लगलन। मगही भासा के लोग भी पीछे न रहलन। भिक्खु जगदीश कश्यप, कृष्णदेव प्रसाद, श्रीकांत शास्त्री जइसन मगहिया मगही भासा के झंडा उठयलन। एतने न, इनकर नेतृत्व में कइगो पत्र–पतरिका परकासित होल जेकरा से न खाली मगही आंदोलन के सुरुआत होल बलुक विभिन्न विधा में लेख लिखाये लगल। एही समय प्रो० रामनंदन, राजेन्द्र कुमार यौधेय, रामनरेश पाठक, बाबू लाल मधुकर, सतीश कुमार मिश्र, मृत्युंजय मिश्र करुणेश मगही लेखन के आंदोलन तेज कइलन। एही समय मगही के आधुनिक आंदोलनकर्त्ता आगे अयलन।

इनका साथे जन-जागरन के अगुआ डॉ० राम प्रसाद सिंह बनलन। इनकर देख-रेख में मगही साहित्य के विभिन्न विधा के विकास होल। मगही अकादमी, गया के गठन करके ई साहित्य के विभिन्न विधा पर पुस्तक परकासित करवयलन, मगही लेखक के मंडली ही न बनवयलन बलुक अपने भी कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता आउ आलोचना लिख के मगही के भरपूर सेवा कयलन। ई इनकर देन हे कि आज मगही अप्पन स्वतंत्र अस्तित्व कायम कयलक। न तो पुस्तकाभाव में खाली हाथ डंका के पीटत हल? मगही इतिहास लेखन में रासविहारी पाण्डेय, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह, डॉ० भरत सिंह भी काम करलन।

1978 में सतीश कुमार मिश्र, राम सिंहासन सिंह विद्यार्थी, रामनरेश पाठक, हरीन्द्र विद्यार्थी, बाबू लाल मधुकर, कुमारी राधा, तृप्तिनारायण शर्मा, शिल्पी सुरेन्द्र आदि के आंदोलन से बिहार सरकार द्वारा बिहार मगही अकादमी के गठन भी होल। जेकर अध्यक्ष पद पर प्रो० केसरी कुमार, श्री राम गोपाल शर्मा 'रुद्र', प्रो० रामबुझावन सिंह, डॉ० रामप्रसाद सिंह जइसन विद्वान आलोचक आउ मगही साहित्यकार बइठलन। बाकि श्री राम गोपाल शर्मा 'रुद्र' जी के कार्यकाल के सर्वश्रेष्ठ आउ समृद्धकाल कहल जा सकऽ हे काहे कि इनकर परयास से दर्जन भर मगही के विभिन्न विधा पर लिखल पुस्तक छापल गेल।

एतने न, पुस्तक लिखा के का होत हल जब एकर पढ़ाई स्कूल–कॉलेज में न होत हल। प्रो० केसरी कुमार के अध्यच्छता में मगध विस्वविद्यालय, बोधगया में

मगही के स्नातक स्तर तक सिलेबस बनल आउ बी० डी० इवनिंग कॉलेज, पटना में एकर पहिला विभाग श्री शंकर दयाल सिंह के सचिव काल में खुलल। ई से ई काल के हम विकास काल कह सकऽ ही।

(ख) स्थापितकालीन साहित्य के परमुख परवीरती

सिद्ध आउ नाथ साहित्य आज सब के सब उपलब्ध न हे। ई चलते स्थापित कालीन साहित्य के परमुख परवीरती पर कलम चलाना टेढ़ी खीर हे। तइयो जे उपलब्ध हे ओकरा अधार पर ई काल के परमुख परवीरती निम्नलिखित हे—

(1) **सांध्य भासा के परयोग**—सिद्ध आउ नाथ कवि न होके साधक हलन। कविता करना इनकर उद्देस्य न हल। दोसर बात इहो हल कि इनखनी में से ढेर साधक कम पढ़ल-लिखल हलन। ई चलते इनकर कविता में भाव-पच्छ के परधानता हे, कला-पच्छ के न। ई भासा के तोड़-मरोड़ के प्रस्तुत कयलन हे। इनकर सैली भी अटपटा हे आउ अस्पस्ट होवे के चलते अरथ भी लगाना कठिन हे। इहे चलते इनकर भासा के सांध्य भासा कहल जा हे। सिद्ध कवि लुइपा कहऽ हथ—

"काआ तरुवर पंच बिडाल, चंचल चीए पइट्ठो काल।"

एकर गूढ़ार्थ हे कि मनुष्य के अंदर पाँच तत्व बिल्लियन नियन बइठल हे, आत्मा रूपी पच्छी के निगले लागी।

(2) **परंपरा के विरोध में प्रगतिसिल चिंतन**—सिद्ध कवियन परंपरा के विरोध में आडंबरहीनता आउ मानवधर्मिता के बखान करके प्रगतिसिल चिंतन के जनम देलन हे। बाद के कवियन पर एकर सीधा परभाव पड़ल हे। सिद्ध के अप्पन सहजधर्म में मानव धर्म के कयल प्रतिपादन से जनें साधारन के ई धरम के प्रति आकर्सन बढ़ गेल हे।

सिद्ध के मानवधर्मी आउ प्रगतिसील चिंतनधारा के गर्भ से पहिलहीं नाथ पंथ के आउ ओकर बाद कबीरदास के जनम भेल। जउन रूप में ई चिंतन धारा नाथ कवियन अपनयलन हे, उहे रूप में कबीर दास अपनयलन हे।

(3) **गूढ़ रहस्यात्मक मूलक रचना**—अनेक रूढ़ियन के खंडन ला सिद्ध कवि पद के रचना कयलन हे। ई पद में गूढ़ रहस्यात्मक मूलक रचना के दर्सन

होवऽ हे। जैन आउ सिद्ध कवियन अटपटा वानी में अप्पन टूटल-फूटल रचना में रहस्यवाद के दरसन करवयलन हे। सिद्ध कवि कण्हपा रहस्यवाद के अजस्रधारा अप्पन रचना में बहावित कहलन हे—

''काआ नावड़ि खाँटे मन करिआल। सदगुरु बअणे धर पतवाल।।''

(4) साहित्य में लोकभासा के पहिला परयोग—सिद्ध आउ नाथ साहित्य में पहिल बेर लोक भासा पुरनकी मगही के परयोग कयल गेल हे। ऊ समय बैदिक भासा, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंस आदि साहित्यिक भासा के परयोग साहित्य लेखन ला होवऽ हल बाकि सिद्ध आउ नाथ उपदेस देवे ला जन साधारन के बीच जन साधारन के भासा के परयोग कैलन हल। सरहपाद के दोहाकोश आउ चर्या पद में पुरनकी मगही के रूप सहजता से देखल जा सकऽ हे।

(5) क्रांतिदर्सी विचारधारा—सिद्धसाधक आउ कवि क्रांतिकारी हलन। इनकर क्रांतिकारी विचार न केवल समाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक छेत्तर में हल बलुक साधना-पद्धति के छेत्तर में भी हल। सोसन आउ अत्याचार के खिलाफ अवाज उठा के ई सिद्ध कवि जहाँ अप्पन राजनीतिक क्रांतिदर्सिता के परिचय देलन हे हुँआ परताड़ित जनता के टूटल मनोबल के समच्छ करुना, नैरास्य, सून्यवाद आदि के उदाहरन रख के आहत हिरदय पर मरहम पट्टी लगयलन हे।

ब्राह्मन कुल में जनम लेके ब्राह्मनी सिच्छा-दिच्छा के विरोध करेवाला सरहपाद के हम क्रांतिकारी न कहम तो का कहम? ई तो जन्मजात क्रांतिकारी हलन। ई ब्राह्मनी से बियाह न करके सरह (तीर) बनावे वाली आउ राजगीर में रहेवाली दलित महिला से बिआह कयलन हल। ऊ जमाना के लेल ई बहुत क्रांतिकारी बात हल।

(6) धार्मिक संकीर्नता पर कुठाराघात—सिद्ध के उत्पत्ति बौद्ध धर्म के बज्रयान साखा से होल हे। कहल जा सकऽ हे कि सिद्ध भी एक तरह से भगवान बुद्ध के ही अनुयायी हलन। बौद्ध धर्म में नारी के परवेस निसेध हल। सरहपाद एकरा में सुधार कयलन। 84 सिद्ध कवियन में तीन गो जोगिनी के भी नाम सामिल हे। ई जोगिनी हथ-मणिभद्रपा, कनखलापा, लक्ष्माकापा। ई ब्राह्मण होके ब्राह्मनवाद के विरोध कयलन। फिनु ई सहज धर्म के परवर्त्तन कयलन। ब्रह्मचर्य छोड़ के गिढ़हत जीवन अपनयलन।

(7) **हठयोग साधना–पद्धति के परयोग**—हठयोग साधना–पद्धति के परयोग सबसे पहिले नाथ संप्रदाय में मिलऽ हे। हठ योग के अरथ होवऽ हे अइसन योग जेकरा में हठ इया जिद्द कयल गेल होय। नाथ योगी 9वीं से 14वीं सताब्दी के बीच होलन हल। ई संख्या में नौ मानल जा हथ ई सब के सब निवृत्तिमार्गी हलन। इनकर हठयोग में चारितरिक दृढ़ता, आचरण सुद्धि आउ इड़ा–पिंगला, अवधू, निरंजन आदि पायल जा हे। एकरा ला नाथपंथी हठ योग करऽ हलन। इनखनी अप्पन कान फाड़ लेवऽ हलन। ई सभ चिलचिलाइत धूप आउ ठिठुरित ठंड में भर देह पानी में खड़ा रहऽ हलन। इनखनी के मान्यता हल कि सरीर के जेतना कस्ट देल जायत ओतने जल्दी इनका सिद्धि मिलत।

(8) **मानवीय प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम के अभिव्यक्ति**—अप्पन देस में चिंतन के दूगो धारा सदा से बहित रहल हे। एक धारा के सिस्ट धारा कहल जा हे तो दोसर धारा के लोकधर्मी नाम पड़ल हे। लोकधर्मी चिंतन धारा ही यथार्थ लौकिक–अलौकिक युक्त मानवतावादी कहला हे।

विभिन्न प्राकृतिक तत्व में अद्वैत–सत्ता के उपस्थिति उपनिसेदन के मूल स्वर हे। ई समन्वयवाद पुरानन में संकीर्न मानवता के समेटित कोई एगो (ब्रहमा, विष्णु, महेश) में विराट् दर्सन करऽ हे। सिद्ध समाज सुधारक के साथ–साथ साधक भी हलन। समाज सुधार के क्रम में मानव–प्रेम के अधार बना के ओकरा बहाने अलौकिक परेम के व्यंजना भी करेला चाहऽ हलन। धार्मिक संकीर्नता के चलते सिद्ध कवि अलौकिक परेम के अभिव्यन्ति ला मानवीय परेम के सहारा लेलन हे। सिद्ध कवि सरहपाद कहऽ हथ—''

जहि मण पवण ण संचरइ, रवि–ससि णाहिं पवेस।
तहि बढ चित्त विसाम करु, सरहें कहिअ उएस।।''

(9) **लौकिक रस के रचना**—स्थापित काल के सब से बड़गो बिसेसता हे कि ई काल में लौकिक रस के रचना मो खूब होल हे। मैथिल कोकिल विद्यापति के देसिल बयना से ले के जैन साहित्य, रासो साहित्य, ढोला मारू दूहा, जय चंद परकास, वसंत विलास, खुसरो के रचना आदि इहे काल के रचना हे जेकरा में लौकिक रस के दर्सन होवऽ हे। सिद्ध आउ नाथ जउन लोकभासा मगही में रचना कर के साहित्य में स्थापित कयलन ओकर परभाव हिंआ देखल जा सकऽ हे।

सिद्ध आउ नाथ के निर्धारित सीमा से परे होके स्वच्छंद धारा में लिखल साहित्य के महत्व भी कमतर न हे। कुछ रचना वीर रस के हे तो कुछ सिंगार रस के। अमीर खुसरो के रचना में विविध रस के दरसन होवऽ हे।

(ग) भक्तिकालीन साहित्य के परमुख लच्छन

मगही साहित्य में भक्तिकालीन कविता अत्यन्त अल्प मात्रा में लिखल गेल हे। बाकि जे लिखल गेल हे ओकर अधार पर भक्तिकालीन साहित्य के परमुख लच्छन नीचे लिखल हे—

(1) **सिद्ध आउ नाथ साहित्य के परभाव**—भक्तिकालीन साहित्य पर सिद्ध आउ नाथ साहित्य के परभाव साफ तौर से झलकऽ हे। सिद्ध से ही नाथ के उत्पति होल आउ नाथ से ही संत कवि के। कबीर आदि संतकवि पर तो नाथ साहित्य के सीधा परभाव पड़ल हे। संत साहित्य तो सिद्ध आउ नाथ साहित्य के ही प्रतिरूप हे। संत काव्य आउ संत दर्सन पर नाथ-पंथ के परचूर परभाव हे।

(2) **गुरु के महत्ता**—भक्तिकालीन कवि गुरु के महत्ता के स्वीकारलन हे। सिद्ध नाथ परंपरा के विकसित करित संत कवि कबीरदास गुरु के गोविन्द से भी बढ़ल मानलन हे।

"गुरु गोविन्द दोउ खड़े काको लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।।"

प्रेममार्गी निर्गुन कवि जायसी भी 'पदमावत' महाकाव्य में गुरु के महत्ता के स्वीकारित कहऽ हथ-'गुरु सूआ जेहि पंथ दिखावा।

(3) **भक्ति-भावना के उनमेस**—भक्ति-भावना के उन्मेस : भक्तिकालीन कवि अप्पन रचना में भक्ति भावना के उन्मेस कइलन हे। इनखनी के उद्देस्य जनसाधारन के बीच भक्ति-भावना के उन्मेस करना भर हल। ग्यानमार्गी कवि ग्यान आउ योग के उपदेस से समाज सुधारक बनेला चाहऽ हलन।

(4) **रहस्य भावना के चरमावस्था**—भक्तिकालीन साहित्य में भक्ति-भावना के बड़ा सुंदर व्याख्या हे। हिन्दी साहित्य के ग्यान-मार्ग में जहाँ शंकर के अद्धैतवादी सिद्धांत के ज्यों के त्यों स्वीकारल गेल हे, उहाँ सूफी काव्य में प्रेम द्वारा अव्यक्त सत्ता के परगट कयल गेल हे।

''ले ले चलऽ हो साहेब लिऔले चलऽ हो।
साहेब अप्पन देसवा लिऔले चलऽ हो।''

(5) **अराध्य देव के समच्छ आत्मसमर्पन**—मगही भक्तिकालीन साहित्य में कवि अप्पन अराध्य देव के समच्छ आत्मसमर्पन करित नजर आवऽ हथ। वास्तव में सच्चा भक्त उहे हे जे अप्पन सब कुछ अराध्य देव के समर्पित कर दे। साधक अपने आप के ईस्वर के चरन में समर्पित कर देवऽ हे। एकरे में ओकर भलाई हे। संत कवि धरमदास अइसने समर्पन करित कहऽ हथ—

''इ देसवा में काँट बहुत हे,
ई कँटवा से छोड़ैले चलऽ हो, साहेब अप्पन देसवा.....

(6) **लोक–साहित्य के सिरजन**—सिद्ध आउ नाथ के पस्चात मगही साहित्य में लिखल साहित्य के अभाव ही झलकऽ हे। एकर कारण के संबंध में डॉ० रामकुमार वर्मा लिखलन हे कि ''सिद्धों की कविता जनता की भाषा से संबंध रखती है अतएव साहित्य क्षेत्र में वह उपेक्षा की दृष्टि से देखी गयी।'' ई काल में मगही लोक साहित्य के विविध विधा में बहुत तरह के रचना होल हल।

(7) **पलायनवादिता**—पलायनवादिता के अर्थ होवऽ हे संसार से नाता तोड़ के चल देना। जब जी उकता जा हे तऽ लोग जाल–जंजाल के त्याग के ई धरती से पलायन कर जा हथ। ई पलायनवादी परवीरती ला आधुनिक हिन्दी काल के छायावादी कवि परसिद्ध हथ। मगही साहित्य के भक्तिकालीन कवि कबीरदास जी कहऽ हथ—

''अब मोर गवना के दिन नियरैलइ,
हम धानी जयबो अकेले सुनु हे सजनी।''

हिन्दी के छायावादी कवि के पलायनवादिता तो संदेह के घेरा में घेरायल हे जबकि मगही कवि खुलेआम डंका के चोट पर एलान कर रहलन हे कि हम्मर गवना के दिन नजदीक आ गेल हे।

(8) **सरस भासा सैली**—मगही भक्तिकालीन साहित्य के अंतिम परवीरती हे–सरस भासा सैली। इहे ई साहित्य के प्रान हे। एकरा पहिले सिद्ध आउ नाथ साहित्य में पुरनकी मगही में अटपटा वानी के दर्सन होवऽ हल जेकर भाव आउ भासा अस्पस्ट होवे के चलते 'सांध्य भासा' कहल गेल। मगही के रूप देखला पर न

लगऽ हे कि ई कवि के भासा सोलहवीं–सतरहवीं सदी के हे। मगही भक्त कवि बदरीदास भी सरस भासा सैली में लिखलन हे—

"कउन सन्देस लेइ पियवा मनइबो,
एहीं सोच मन दुखी भेल सजनी।"

अंतत—हम कह सकऽ ही कि मगही भक्तिकालीन साहित्य में कवि सरस भासा सैली के सहारे कविता के गति देलन हे।

(घ) परवर्ती काल आउ ओकर परमुख लच्छन

मगही साहित्य के तीनो काल में ई अंतिम काल ही मगही साहित्य के आधुनिक स्वरूप दन्ने ले जा हे। इहे काल में हम साहित्य के विभिन्न विकास देखऽ ही। मगही अब जा के स्थापित भासा बन गेल हे। ई काल में ही देस के अजादी लेल स्वतंत्रता आंदोलन होल तऽ जागरन गान गावल गेल। गाँधी जी रास्ट्र नेता के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन में उभरलन। साहित्य में यथार्थवाद आउ अतियथार्थवाद से संबंधित रचना खूब रचल गेल। समकालीन हिन्दी कविता के तर्ज पर मगही कवि भी मुक्त छंद के कविता लिखे लगलन। इहे सब देख के परवर्ती काल के महत्त्व आउ दोसर सब काल से जादे दिखाई पड़ऽ हे। मसलन परवर्ती काल आउ ओकर लच्छन के हम निम्नलिखित बिन्दु में रख सकऽ ही—

(1) विदेसी विद्वानन द्वारा मगही मूल्यांकन—मगही भासा के ऊपर जेतना काम भारतीय विद्वान कयलन हे ओकरा से जादे काम विदेसी विद्वान द्वारा कयल गेल हे। एतने न डॉ० ग्रियर्सन मगही से संबंधित कईगो किताब भी लिखलन। कैथी लिपि के डॉ० ग्रियर्सन बिहारी भासा के लिपि कहलन। सर विलियम जोन्स कलकत्ता में बारेन हेस्टिंग्स के समय, 'एसियाटिक सोसायटी' के स्थापना कइलन। सबसे पहले पुरातत्वविद फ्रांसिस बुकानन बिहार के विवरनिका तैयार कयलन।

(2) ईसाई मिसिनरी द्वारा मगही परचार–परसार—ईसाईयत के बढ़ावा देवे ला ईसाई मिसिनरी द्वारा मगही के परचार–परसार खूब कयल गेल। ईसाई मिसिनरी भारत आके धरम परचार कर रहलन हल, मगही भासा–भासी जनता मगही भासा छोड़ के दोसर भासा समझबे न करऽ हलन। बाध्य होके ईसाई मिसिनरी मगही दन्ने मुखातिब होल।

(3) भिन्न-भिन्न रस के साथ भक्ति–भावना—मगही में सिद्धकाल से

लेकं परवर्ती काल तक छिट-पुट रूप से सिस्ट साहित्य के रचना तो भेल बाकि ओकर लिखित साहित्य आज न दिखाई पड़ऽ हे। परवर्ती काल के कवि में भिन्न-भिन्न रस के अंतर्गत मुख्य रूप से सांत, सिंगार आउ हास्य रस देखे ला मिलऽ हे तथा ओकरा साथ भक्ति रस के भी परधानता कभी-कभी दिखाई पड़ऽ हे।

'समइया भेल भारी, ये गिरधारी।'

कृष्णदेव प्रसाद के कविता जेकरा में भक्ति, सिंगार, सांत, हास्यरस के दर्सन होवऽ हे।

बाँचि ले मोरी पतिया, प्रीतम, मान ले मोर बतिया
लोक-लोक में अचरज बाना, अलख रूप मुरतिया
सबद-सबद में नाम अनुपम अगम अनाम सुरतिया।।''

(4) रास्ट्रभक्ति व देसानुराग के भावना—काव्य में रास्ट्र भक्ति व देसानुराग के भावना भारतीय साहित्य में बहुत दिन से होवित आयल हे। सत्यचन्द्र सत्य 'विशारद' के मगही कविता में अंग्रेजी राज में जे सिपाही अंग्रेज के खैरखाँह बनल हलन उनका अंदर रास्ट्रभक्ति आउ देसानुराग के भावना जगावे के कोसिस कयल गेल हे—

''गुन गावऽ भारत के, नही ई विदेसिया के,
यहीं के हवऽ हॉड़-माँस रे सिपहिया।
रुल औ कानून देखि हिय में विचार करू,
मरे पर जली तन यहीं रे सिपहिया।''

(5) युगबोध आउ समाजिक चेतना—परवर्तीकाल में हिंआ युगबोध आउ समाजिक चेतना से संबंधित कविता बड़ धड़ल्ले से लिखल गेल हे। एकरा अंतर्गत जाति-पाँति, छुआछूत, मंदिर-मस्जिद, परिवारिक वैमनस्य, कलह, मँहगाई, बेरोजगारी आदि चित्रित कयल गेल। मम्प्रदायिक सौहार्द्र, सर्वधर्मसमभाव आउ आपसी मेल-जोल पर मगही कवि बहुत जोर देलन हे। श्री विश्वनाथ मिश्र पंचानन अप्पन कविता 'मत बाँटऽ भइया' में लिखलन हे-

मंदिर में ठाकुरजी के भोग लगावऽ,
मस्जिद में पाँच बेर अलख जगावऽ।

गुरुनानक के ग्रंथ गुरुद्वारा में गावऽ,
हम अप्पन सुनाई, तूँ अप्पन सुनावऽ।।

(6) रास्ट्रीय नेता के रूप में गाँधी—रास्ट्रीय आंदोलन में देस के अजादी ला हेतुआमनी राजनेता सक्रिय हलन बाकि मगही काव्य में रास्ट्रीय नेता के अगुआ के रूप में गाँधी ही रहलन। इनकर हर कार्जक्रम के परचार–परसार आउ समर्थन मगही कवि द्वारा कयल गेल। गाँधी के कहला पर विदेसी कपड़ा के तेयाग करे के आंदोलन छिड़ल। चरखा चलावे के आगरह गाँधीजी कयलन। बस का? मगही कवि सगरो ई गीत गैलन—

''सखिया सब मिली चरखा चलावहु, जुग बदलावहु हो।
ललना सब मिली चरखा चलावहु, देस दुख टारहु हो।
चरखा सुराज के सिंगार से हिय हुलसावहु हो।।''

(7) साहित्य में भिन्न-भिन्न विधा के विकास—परवर्तीकाल में ही पहिले पहल साहित्य के भिन्न-भिन्न विधा में रचना भेल। एकरा से पहिले दुन्नो काल में खाली काव्य–सिरजन होल हल। ई काल में कविता के साथ–साथ निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, लघुकथा, रिपोर्ताज, इतिहास ग्रंथ, इंटरव्यू साहित्य, रेडियो नाटक, वार्त्ता, जीवनी, आलोचना, संस्मरन आदि साहित्य के खूब रचना होल। ई काल में एक से एक कवि उभर के सामने अयलन। बाबूलाल मधुकर के कविता देखल जा सकऽ हे—

'ई लहकल दुपहरिया के
उमसायल उमस बुलावऽ हो
जलम–जलम के पिआसल तपसि के
तरस बुलावऽ हो, आवऽ।''

(8) हास्य–व्यंग्य के पहिला दर्सन—परवर्तीकाल में ही हमरा हास्य–व्यंग्य के पहिला दर्सन होवऽ हे। परवर्तीकाल के हास्य–व्यंग्य से मगही कविता भरल हे। योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश' के कविता मुखिया' में मुखिया पर व्यंग्य हे—

''हम पंचायत के मुखिया ही
झगड़ा नयँ केकरो फरिअइलूँ
बन सकल जहाँ तक ओझरइलूँ

ठीका लेके कुछ नयँ कइलूँ
लेकिन कुल पइसा खा जा ही।। हम।।''

अन्य मगही कवि भी बड़-बड़ हास्य-व्यंग्य लिखलन हे।

(9) मगही के स्वरूप परिवर्तन—आधुनिकता के परभाव से परभवित होके मगही भी ई काल में आधुनिक हो गेल। विस्व के वैस्वीकरन होते ही मगही के स्वरूप में तेजी से परिवर्त्तन होल। प्राचीन मागधी के स्वरूप लुप्त हो गेल। खड़ीबोली हिन्दी के साथ अंग्रेजी भासा के एकरा पर खूब परभाव पड़ल। अंग्रेजी सबद के धड़ल्ले से परयोग भी मगही में होवे लगल। मगही के आदि कवि सरहपाद के मगही सबद के आज के आधुनिक मगही कवि न अपना रहलन हे। आज के मगही के मानक रूप स्थिर न होवे के चलते भी एकर स्वरूप स्थायीत्व न प्राप्त कर सकल हे।

अभ्यास के सवाल :

1. काल विभाजन के समस्या पर परकास डालऽ।
2. स्थापितकालीन साहित्य के परमुख लच्छन बतलावऽ।
3. भक्तिकालीन साहित्य के परमुख लच्छन बतलावऽ।
4. परवरती काल के परमुख लच्छन बतलावऽ।

●●●

विदेसी-देसी विद्वान आउ मगही

ग्रीक जातरी मेगास्थनीज तो मगध के सभ्यता-संस्कृति देखके चकित हलन।

विदेसो विद्वान जातरी फाहियान के आँख तो पाटलिपुत्र के राजमहल के खूबसूरती देख के चउँधिया गेल हल।

चीनी जातरी ह्वेनसाँग जब भारत अयलन हल तब ऊ लिखलन हल कि ऊ समय बिहार, बंगाल आउ पच्छिमी असाम में एगो भासा बोलल जा हल। ऊ भासा पुरनकी मगही ही हे । ऊ नालंदा वि० वि० में अध्ययन करे लगलन हल।

डॉ० ग्रियर्सन से पहिले वारेन हेस्टिंग्स के समय में कलकत्ता में 1784 में Asiatic Society के स्थापना होल हल। एकर संस्थापक हलन सर विलियम जोन्स। 1788 मे Asiatic Researches नामक पुस्तक माला के परकासन सुरू भेल । फिनं 1798 में हेनरी काल ब्रुक इंगलैंड में Royal Asiatic Society के स्थापना करके जोन्स के काम के आगे बढ़यलन। पुरातत्वविद फ्रांसिस बुकानन 1807 में भारत अयलन आउ सबसे पहिले बिहार के विवरनिका तइयार कैलन । 1811-1813 तक बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी (पटना) द्वारा पहिला बार गया-पटना से साच्छात्कार लेके मगही आउ एकर भासा -साहित्य के बारे में काफी सूचना देलन। 1858 में जान बीम्स A Comparative Grammar of the Aryan Language of India पुस्तक लिखके भारतीय आर्यभासा के उदभव आउ विकास तथा उत्तरी भारत के भासा के भिन्न-भिन्न सबदन के संस्कृत से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कैलन। 1865 में फैलन आउ लाला फकीरचंद अप्पन पुस्तक 'फैलन्स न्यू हिन्दुस्तानी डिक्सनरी' में मगही कहाउत के संकलन कैलन हे। 1872 में केलॉग भारत अयलन। ई Grammar of Hindi Language लिखलन । ई पुस्तक में 14 बोली के सबद रूप आउ धातु रूप के बरनन भेल हे जेकरा में मगही के भी चर्चा हे। सबसे पहिले गिल क्राइस्ट Magahi Grammar लिखके एगो राह दिखयलन । 1880 में विलियम क्रुक Popular Religion And Folk Lore नामक पुस्तक लिखलन । डा० ग्रियर्सन 1871 में I.C.S. करके भारत अयलन । Sir Abraham Grierson 1873 में बिहार बंगाल में कार्यभार सँभाललन। डा० ग्रियर्सन आउ हार्नले दुन्नो मिलके 'A Comparative Dictionary of Bihari Language' नामक किताब लिखलन । एकरा में मगही के सबद दूसर बोली

के साथ आयल हे। Bihar Proverbs में जॉन क्रिश्चियन मगही मुहावरा के संकलन कैलन हे। आगस्ट्स फ्रेडरिक रुडल्फ हार्नले अप्पन किताब A Grammar of the Eastern Hindi Compared With the other Gaudian language में (1872-73) में मगही भासा पर परकास डाललन हे। डॉ० ग्रियर्सन तो किताब के झड़ी लगा देलन। इनकर प्रसिद्ध पुस्तक के नाम हे –

(1) A Comparative Dictionary of Bihari Language (1882) .

(2) Seven Grammars of the Dialects and Sub-Dialects of the Bihari Language

ऊ एकरा में बिहार के दूसर बोली के साथ मगही पर भी परकास डाललन हे।

(3) A Hand Book of the Kaithi Character 1881 मे छपल । एकरा में मगही के कैथी लिपि के बरनन हे ।

(4) Linguistic Survey of India एकरा में मगही के बारे में पोख्ता जानकारी हे।

(5) On the Stone Image of the Buddha Found at Rajgriha

(6) Bihar Peasant Life 1885 में छपल ।

(7) The Geography of Gaya District

(8) Language of Magahiya Dome

(9) Song of Gopichand 1885 में छपल।

(10) Essays On Bihari Declaration and Conjugation में भी मगही पर आलोचना लिखल गेल हे।

Sir Ralph L.Turner के A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Language 1962 में छपल। ई विद्वानन के अलावे ह्युज फ्रेजर, एजी शिरेफ आदि विद्वान भी भारतीय भासा आउ लोक साहित्य पर काम करलन। लोक गीत के संगरहकर्त्ता में W.G .Archer के नाम भी आदर के साथ लेवल जा हे। ऊ आदिवासी गीत के बड़हन संगरह कैलन । पुरातत्वज्ञ जनरल कनिंघम Archeological Survey of India के निरदेसन में 1870-80 तक बोधगया में उत्खनन कार्ज करवयलन। Maxmuler जर्मन हलन । इनकर जनम 1823 मे होल आउ मिरतु

1900 में भेल । ऊ Royal Instituteमें भासा विग्यान पर नौठो व्याख्यान देलन 1921 में ई पुस्तक के रूप में छपल। 'पौरानिक कथा विग्यान आउ धरम' नामक पुस्तक के चलते इनकर नाम अग्रगन्य हे ।

देसी विद्वान आउ मगही

पंडित राहुल सांकृत्यायन अप्पन परसिद्ध पुस्तक पुरातत्व निबंधावली में मगही के विकास सिरसक के अन्तर्गत एकर वर्गीकरन करित दू भेद कैलन हे –

(1) पुरनकी मगही आउ (2) नयकी मगही ।

राहुल जी के अनुसार आधुनिक उड़िया, बंगला, असमी, मैथिली, भोजपुरी आउ मगही पुरनका मागधी के ही रूप हे। ई जाँच के बाद पयलन कि 84 सिद्धन में जादेतर मगही के ही कवि इथ । 19वीं सदी के जिला गजेटियर में भी मगही के नाम अयतें रहल हे। Evolution of Magahi (J. Munishwar), The Glories of Magadh (J.N. Samadar), Folk Lore and Folk Lore in India (S.Sengupta), Language of Bihar (Lalita Prasad Vidyarthi). The Origin and Development of Bengali Language (Dr. S.K. Chatterjee) Linguistic Survey of Sadar Sub-division of Manbhum and Dalbhum (Dr. Vishwanath Prasad & Dr. Sudhakar) In Magadhan Literature (Hira Prasad Shastri), Magahi Culture (Asim Mitra) आउ A Comprehensive History of Bihar (Edited by Dr. K.K. Dutta) में मगही पर जम के विचार करल गेल हे। Bibliography of folk studies in Bihar (Harish Chandra Prasad & Geeta Sen), The Origin and Development of Bengali Language (Suniti Kumar Chatterjee) अमूल्य धरोहर हे जेकरा में मगही के खूब चर्चा हे । चटर्जी महोदय के जनम 1980 में भेल । ई कलकत्ता वि० वि० के प्राध्यामक से नेसनल पोरफेसर बनलन।

अभ्यास के सवाल :

1. विदेसी विद्वान द्वारा मगही के सेवा के बरनन करऽ।
2. देसी विद्वान मगहीं के विकास ला का करलन ?

●●●

मगही के परमुख विधा

मगही काव्य

मगही काव्य के इतिहास के बारे में कहल जा सकऽ हे कि मगहीभासी लोग के कंठ में बसल लोक गीत, लोक धुन बहुत पहिले ही विकसित हो गेल हल। जेकरा में अध्यात्म, मानवतावाद, लोकरीति–रिवाज के अंस मिलऽ हे। जइसे–जइसे समाज के विकास होवऽ हे काव्य रचना भी ओही ओर मुड़ जा हे। मगही के आधुनिक काल में कविता मध्यकालीन सोच-विचार के किनारा करित एगो नया रूप में सामने आवऽ हे। बीसवीं सताब्दी के सुरुआत में मगही कविता में नया जागरन के बोल मिले लगल हल। ऊ घरी देस में स्वतंत्रता संगराम के लड़ाई सुरू हो गेल हल, जेकरा से मगही काव्य में भी देस-भक्ति गीत लिखे जाय लगल हल।

ई कहल जा सकऽ हे कि आधुनिक काल के तीसरा आउ चौथा चरन में मगही कविता के काफी विकास भेल। लोक भासा के कविता में लोकगीत के परभाव के कारन सिस्ट साहित्य में रखल जा हे। लोक भासा के सुरुआत में नीमन–नीमन कविता लोक धुन में ही लिखल गेल जेकरा में लोक जीवन के राग-विराग तत्व मिलऽ हे। हिन्दी काव्य के साथे–साथे मगही काव्य में भी तरह–तरह के परयोग होवे लगल हल।

सबसे पहिल नवादा के कवि केसरी नंदन के मगही कविता ''अब नहीं सहल जाहे एत्ता रे बिपतिया टूटि गेलै धीरजा मोर'' परकास में आयल। ई मगही के पहिला जन कवि हलन। 1952-53 में राम प्रसाद पुंडरीक के कविता परकास में आयल।

1969 में परिजात परकासन से ख्याति प्राप्त समिच्छक प्रो. कपिलदेव सिंह के 'मगही का आधुनिक साहित्य' नामक आलोचना पुस्तक छपले जेकरा में मगही के परमुख कवि के रूप में राजेन्द्र कुमार यौधेय, कृष्णदेव प्रसाद, रामगोपाल 'रुद्र', राम प्रसाद सिंह 'पुंडरीक', योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश', राम सिंहासन सिंह 'विद्यार्थी', सुरेश दूबे 'सरस', श्रीकांत शास्त्री, रामनरेश पाठक, रामनंदन, बाबूलाल मधुकर के बिसेस रूप से चर्चा भेल। राजेन्द्र कुमार यौधेय के कविता 'करिआवा बादर' के छटा देखे लायक हे—

घट्टा के ओखा में टुभकइ टिटिहियाँ, झनकावइ हिरदा के तार ।
खुलि गेलइ रजवा के लाख रे सुअरिया, रंगे भेलइ छितीकार।।

इनकर कविता संगरह 'चटके इँजोरिया राग के वन में' 2008 में परकासित भेल। इनकर प्रबंध काव्य 'सुलोचना' आ 'धर्मपुत्र' 1986 में छपल। इनकर महाकाव्य 'मानिनी शकुंतला' 1992 में छपल। महाकाव्य 'सिखर आ घाटी' आ प्रबंध काव्य 'वन्या' न छप सकल हे।

सबसे पहिले श्रीकान्त शास्त्री आउ डॉ० रामनंदन के संपादन में 'मगही लोक गीत' सेंगरन' छपल। डॉ० रामनंदन के कविता में सिंगार रस के साथे प्रगतिसीलता भी देखाई पड़ऽ हे। इनकर कविता में मानवता के होइत ह्रास के देखल जा सकऽ हे।

'हम अदमी ही कि ही मसीन, खा करके
सतू आध पाव, रिक्सा हॉकऽ ही रात दिन।'

लोकगीत के संगरह में विश्वनाथ प्रसाद के 'मगही संस्कार गीत' एक महत्वपूर्ण कृति हे। उहे घरी मथुरा प्रसाद सिंह 'सरस' आउ रामेश्वर महतो मिल के 'मगही बाल गीत' के संपादन कैलन। लखीसराय के श्री नंदन शास्त्री के किताब 'अप्पन गीत' के छपना काफी महत्वपूर्ण हे।

सन 1958 में सुरेश दूबे सरस के गीतिकाव्य 'निहोरा' साहित्य भारती से छपल। 1958 के बाद संत राम नगीना सिंह मगहिया के दर्जन भर छोट–छोट किताब सन 1961 से 1979 तक छपित रहल। मगहिया जी के किताब 'संतपुष्प', 'बिक्रम पुकार', बिक्रम प्रतिज्ञा', 'संत ललकार', 'बिक्रमी छुरछुरी', 'मगहिया गीत' आदि परकासित भेल।

मगही भासा के परचार करे में जी जान लगा देवे वाला कवि संत राम नगीना सिंह मगहिया के कविता के बानगी देखल जाय—

सखि सावन महिन्ना कमाल कइले हे, बरखा पड़ल धरती ठण्ढायल
चारो तरफ पानी-पानी बुझायल, जीव–जंतु पर पूरा ख्याल कइले हे ।

1964 में योगेश्वर प्रसाद सिंह योगेश के पहला काव्य संकलन 'इंजोर' के परकासन पटना से भेल । इनकर दूसर किताब 'लोहचुट्टी'1966 में हास्य व्यंग्य परधान कविता संकलन छपल जेकर बानगी देखऽ—

तू कविता करेला हमरा उकसावऽ हऽ,
या जरल देह में हमरा नोन लगावऽ हऽ।

राम विलास रजकण के कविता संकलन 'वासंती' सन 1965 ई० में छपल। एकर बाद तो इनकर काव्य ग्रंथ के बाढ़ आ गेल। 1968 में रजनीगंधा 1969 में 'पनसोखा' आ 'दूज के चाँद' के परकासन करैलन। इनकर कविता में प्रेम प्रसंग के साथे-साथ रास्ट्रप्रेम आउ प्रगतिसील तत्व हे –

'बुधुआ के मउगी रो रहलइ, पेन्हे लागी साड़ी—
चार दिन से ओकर चुल्हा पर न चढ़लइ हाड़ी।
गदहा से भी बदतर जिनगी काट रहल इन्सान,
हो रहल महल में चहल-पहल, झोपड़िया हे सुनसान।

राम सिंहासन सिह विद्यार्थी के काव्य सकलन 'जगरना' में जगावे वाला कइगो गीत संकलित हे। इनकर कविता में देस प्रेम के साथे-साथे सोसक वर्ग पर भी कटाच्छ भेल हे। 'उपहल बादल' सीर्सक कविता विद्यार्थी जी सफेदपोस पर लिखलन हे। सतम दसक में राम कृष्ण मिश्र के काव्य संकलन 'बेलपत्तर' परकासित होयल। इनकर दूसर कविता के संकलन 'गीत के जुड़छाँह' परकासित होयल। मिश्र जी ग्राम्य जीवन के साथे मानव पीड़ा के बरनन कैलन हे।

कँपसल के भरल आँख में पानी नियन ही हम,
कहलो न कहल जाय, कहानी नियन ही हम।'

सन् 1970 ई० में राम विनय शर्मा विनय के 'बधवा में भेलइ विहान' सीर्सक मगही गीत संगरह परकासित भेल। 1971 ई० में बाबू लाल मधुकर के पहला काव्य संकलन 'लहरा' परकासित भेल। इनकर दूसर कविता संगरह 'अंगुरी के दाग' 1978 में परकासित होयल। जेकरा में समाजिक विसमता, बदलाव ला छटपटाइत आम अदमी के बेचैनी के बड़ी सावधानी से चित्रन हे।

बड़ी सहलियो, मालिक-मालिक खूब कहलियो।
अब तो खइनी के पिरकी नियन थूक देबो।

त्रिवेणी शर्मा सुधाकर के कविता संगरह 'मगही लहर' 1978 ई० में आउ 'मगही तरंग' के परकासन भेल। डॉ० राम प्रसाद सिंह के कविता संकलन 'परस पल्लव' 1977 ई० में मगही अकादमी गया से परकासित भेल इनकर कविता 'भोर बहु' के देखी—

कुच-कुच अन्हरिया के खटिया से उतर गेल।
नभ के देवलवा पर चढ़ के उतर चलल।
चुप्पे समुन्दर के नगीचे पसर गेल।

डॉ० राम प्रसाद सिंह के मगही कविता 'साँझ' परकासित भेल। 1987 ई० में 'झरोखा' कविता संगरह के परकासन भेल, जेकरा में अड़तालीस कवि लोगिन के कविता छपल। जेकरा में शिल्पी सुरेन्द्र, जयराम सिंह, मथुरा प्रसाद नवीन, श्रीकांत जैतपुरिया, उमेश्वर, सुरेन्द्र प्रसाद तरुण आदि परकास में अयलन। उहे समय सतीश कुमार मिश्र के 'हिलकोरा' आ 'टूसा' के परकासन भेल। जेकरा में ठेठ मगही सबद के परयोग भेल।

डॉ० स्वर्णकिरण के लिखल अतुकांत कविता 'धरती फट गेलइ' आ 'मुआर' के परकासन 1978 ई० में भेल। एकर बाद 'धरती के पाती तथागत के नाम' आ 'नोआखाली में बापू के परकासन भेल। गया से गोविन्द प्यासा के 'सँझउती' छपल।

1979 में मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' के मुक्तक संगरह 'गजल हे नाम' छपल। इनकर रचना में एगो मधुर लयात्मक प्रवाह हे जे पाठक के मनके बरबस अपना साथ बहाले जाहे—**आम आदमी के गम लिखलिओ हे।**
कुछ न बेसी न कम लिखलियो हे।

रामाधार सिंह 'आधार' के काव्य पुस्तक 'मगही कवितावली' के परकासन 1983 ई० में भेल। एकरा में नीति संबंधी, समाज सुधार आ वर्तमान व्यवस्था पर निमन व्यंग्य भेल हे।

भाई ई संसार तो माला के हइ जाल।
हरदम तोहर सिर पर नाचित हवऽ काल।

ई कवि लोग के बाद ढेर मनी कवि कविता लिखित हलन जेकरा में जयनाथ कवि के 'पनघट', रामपुकार सिंह 'राठौर के 'आंजन', 'महेन्द्र बिहारी के 'सत्तसई' महावीर दूवे के 'मगही कुंडलिया', राज कुमार प्रसाद के 'लुत्ती', रंजन कुमार मिश्र के 'ढरकित लोर', सत्यनारायण दास के 'मगही संदेस', राजेन्द्र पाण्डेय के 'ढिबरी', रास बिहारी पाण्डे के सम्पादित 'भुरुकवा उग गेल', मृदुल के 'मोतिया के माला', राजेन्द्र सिंह के 'लुआठी', सुरेश दत मिश्र के 'उगेन', जयराम देवसपुरी के 'सुलगइत साँस', महेन्द्र प्रसाद के 'जिनकर चरनिया में भेलइ इंजोर' आ दीनबन्धु के 'मगही महक' परमुख हे। राज कुमार प्रसाद के कविता में गरीबी के मारमिक बरनन हे। अमीरी पर व्यंग देखे लायक हे–**"हे रे गुलाब अगरा ले जेत्ते चाहें।"**

सन् 1985 में जनवादी कवि हरीन्द्र विद्यार्थी के जनवादी गीत आ गजल संग्रह 'दमाही में जोतल अदमी' आउ सन 2000 में 'मोरहर के पार' के परकासन भेल। जेकरा में मजदूर आउ किसान वर्ग के दर्द भरल चित्रन बखूबी भेल। इनकर जनवादी गजल देखते बनऽ हे—

''ई गजब नजारा आवे लगल हे।
जे न छूले लगना गुरकावे लगल हे।।''

जनगीत के बानगी देखल जाय—

''पंख सजइले बगुला उज्जर मस्ती मार रहल हे।
लिख-लोढ़ा, पढ़-पत्थर तइयो भासन झाड़ रहल हे।।

2007 में श्री हरीन्द्र विद्यार्थी के कविता संगरह 'मगध गुर्रा रंहल' छपल फिन मगही के समकालीन कविता पर संगरह 'फल्गु से गंगा' छपल। उनकर 'वीरू माँझी' मगही महाकाव्य छपे ला तइयार हे।

शशि शेखर प्रसाद के 'जरी जागऽ बुधगर लोग' बिहार मगही मंडल से 2007 में छपल। राधेलाल के 'परातकाली, मगही रमायन' परकास में आयल। इनकर ढेर मनी कविता 'विहान' 'मगही' पतरिका में छपल।

जब गजल के बात आवऽ हे तऽ आधुनिक गजल रचनाकार में दीनबन्धु पाठक के 'तीन मीठ गजल गीत' सामने आयल। एकर बाद देवसपुरी, डॉ० राम प्रसाद सिंह सामने अयलन फिन घमंडी राम, केशव प्रसाद वर्मा के नाम लेवल जा सकऽ हे।

घमंडी राम उर्फ रामदास आर्य के गीत के पहिला संकलन 'गीत आदमी के' 1987 में आ 'धरती के गीत' 1989 में छपल। इनकर गीत के अनेक किताब छपल हे जेकरा में 'युग के पुकार', 'दिल के घाव' आउ 'एकलव्य' मगही महाकाव्य काफी चर्चित भेल। जनवादी गीत आ गजल भी काफी दमगर हे। घमंडी राम के 'दिल के घाव' (परकासित 1998) गजल संगरह के बानगी प्रस्तुत हे—

''मोर पसेना के कलई अटरिया चढ़ल,
फूस के बाँस के हमरा चँचरी मिलल।''

दूसर गजल के पंक्ति हे—

'कोठा महल अटारी बनावल जेकर
आज ओकर झोपड़िया बियावन लगे।

सन 1989 में ई० में चन्द्र शेखर प्रसाद सिन्हा के 'हाथ में लेके रुमाल' परकासित भेल। मगही के क्रान्तिकारी कवि मथुरा प्रसाद नवीन के 'बड़हिया गोली कांड' आउ गीतकार राम नरेश वर्मा के नाम से डॉ० भरत सिंह के लिखल किताब गीत संकलन परकासित भेल। अलखदेव प्रसाद 'अचल' के कुसल संपादन में 'कविता कली' नाम से बारह कवि के रचना 1989 में छपल। जेकरा में 'बादर सरकार' आ 'पढ़ल कुत्ता' सबसे लोकप्रिय भेल।

रामाशीष प्रसाद सिंह द्विज के काव्य 'मगही के फूल' सन 1992 में आयल जे मुँगेर से परकासित भेल हल। मगही के समृद्धि काल में अनिल विभाकर के छन्द मुक्त कविता 'झाँझ' आ 'इंगोरा' परकासित भेल। 1992 में ही पारसनाथ कुशवाहा कॉलेज, अछुआ, पालीगंज से कई काव्य संगरह परकासित भेल, जेकरा में महेन्द्र प्रसाद देहाती के काव्य 'दहेज', 'पपिहरा', 'दान वीर' के अलावे संपादक केशव प्रसाद वर्मा, अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, राम पारिख, प्रो० दिलीप कुमार के सहजोग से 'पाटली' में काव्य विसेसांक निकलल।

प्रो० दिलीप कुमार आ प्रो० सुखित वर्मा के सम्पादन में 'साठी' नामक कविता संगरह परकासित भेल। 'साठी' में साठ कविता संगेरल गेल। लालमणि कुमारी के 'लोक गीत संग्रह' वृहद किताब छपल।

मगही साहित्य सम्मेलन अछुआ से 1997 में 'चोट घन चोट' नामक कविता संगरह छपल। जेकर रचनाकार गौरी शंकर सिंह आ राम गोपाल पाण्डेय हथ। प्रो० अवधेश कुमार सिन्हा के काव्य 'उकटा–पुरान', 'चोकर ला बेकार' आ श्रवण कुमार मधुर के 'सौगात' सीर्सक कविता संकलन छपल जेकरा में समाज में व्याप्त अव्यवस्था पर व्यंग हे डॉ० दशईं सिंह के 'भक्ति रसामृत' गीत परकासित भेल। स्वर्गीय कृष्ण देव प्रसाद के 1996 में 'बाँचि ले मोर पतिया' परकासित भेल। कुमारी राधा के 'अधरतिया के बँसुरी' भी छपल जेकरा में नारी के छटपटाहट दरसावल गेल हे। मगही के जानल मानल कवि शिव प्रसाद लोहानी के 'दुभ्भी', 'मग्गह के फूल' आ मगही गीतकार राज कुमार प्रेमी के गीत संगरह 'गीत-निर्झर' छपल।

अरुण कुमार गौतम के गीत 1998 में 'गौतम के गीत' नाम से आ सुभाष चंद्र किंकर के 'मत जा तू परदेस' सीर्सक काव्य पुस्तक छपल। उनकर गीत के पंक्ति हे —

'रतिया के जखनी उठऽ हे लहरिया दिल में उठऽ हे बड़ा ताप हो ।
जइसे पहुँच जयबऽ हम्मर दुअरिया गावे लगम गीत अलाप हो ।'

'अइसन घर के छोड़ कहीं तू मत जा करे कमाई,
दोसर के मठ्ठा से अच्छा होवे अप्पन खटाई।'

अरुण कुमार सिन्हा के काव्य संकलन 'बाँसुरी बजते रहल' आ उमा शंकर सिंह के काव्य 'गाँधी के देस में' छपल। पवन तनय के कविता संगरह 'अच्छर के ताप', राम पारिख के काव्य संकलन 'पाटलि के फूल' आ कवि-कहानीकार-नाटककार केशव प्रसाद वर्मा के आधुनिक कविता संगरह 'गीत हमर मन के' 2003 में परकासित भेल, जेकरा में अतुकांत कविता के साथे नवगीत आ कविता के सुंदर बरनन हे।

'सुखल अधर के कमल पत्र पर, लिखल हमर नवगीत ।
मन के ग्रंथी तोर प्रिय तू पढ़ प्रणय के रीत !'

पवन तनय के कवि मन जथार्य सोच–परक हे जे अप्पन कविता के जरिये समाज में व्याप्त कुव्यवस्था पर व्यंग कैलन हे।

बेसवा के उपर लिखइत कवि कहऽ हथ कि :—

'सभे जात ला, सुखल हल एकर दूरा ।'

कवि डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह 'सुमन' के लिखल काव्य संकलन 'गोरी तोर लाल ठोर' के परकासन 2005 में शेखर प्रकाशन पटना से भेल। एकरा में रितुबरनन सिंगार, प्रेम, रास्ट्रीय चेतना आउ परकीरती चित्रन हे। इनकर मुक्त छंद कविता 'भूलित भागित छन' में परयोगवादी नयकी कविता के दरसन होवऽ हे

'के जानऽ हल, मुँह के चिबावल लाल बीड़ा
हो जायत परसौत के पीड़ा ।
मेआरल खेल बन जायत एगो तमासा
आ ई लुरगर जिनगी हो जायत बतासा'

अमर अलंकृत के काव्य संकलन 'तीरथाटन' आ 'मुँह देखाई' छपल हे। अइसे आधुनिक उदीयमान कवि में डॉ० उमाशंकर सिंह सुमन के नाम भी चर्चित रहल हे। आज पाटलि, अलका मागधी, मगधांचल आ नवजीवन में ई लोग के रचना देखल जा सकऽ हे। सिद्धेश्वर चौधरी 'मंजु', सुरेन्द प्रसाद 'तरुण', शेषानंद मधुकर, बैद्यनाथ शर्मा, ओंकार निराला, रामनाथ सिंह, राम पुकार 'कुशवाहा राधा कृष्ण राय, राकेश, ललन शर्मा, उमेश चन्द्र मिश्र, वीरेन्द्र सिंह आजाद, डॉ

भरत सिंह, डॉ० सच्चिदानंद प्रेमी, भाई बालेश्वर, गणेश प्र० गुप्ता, कुमारी उर्मिला आदि के रचना भी परकास में आयल हे।

मगही कविता में राम गोपाल शर्मा रुद्र एगो जानल पहचानल नाम हे। ई मगही 'उपदेश गाथा' लिखलन हे। एकर परकासन बिहार मगही अकादमी पटना कैलक हे।

प्रो० केसरी कुमार के कविता संगरन बिहार मगही मंडल पटना से परकासित होल हे। एकर नाम हे 'केसरी कुमार के मगही कविता' ई नकेनवाद के एगो स्तम्भ आ प्रपद्यवाद के प्रनेता हलन।

मगही कवि कृष्ण मोहन प्यारे महाकाव्य के साथे-साथ काव्य संकलन भी लिखलन हे। इनकर महाकाव्य के नाम हे 'सवासिन' इनकर दू गो काव्य संकलन भी परकासित भेल हे जेकर नाम हे 'असगनी' आ 'रात अखरखन'

रामपुकार सिंह राठौर दूगो काव्य संकलन लिखलन हे—'आँजन' आ 'राम बोलऽ'।

मगही नाटक, एकांकी आउ नुक्कड़ नाटक

मगही नाटक

नाटक तऽ दिरिस काव्य हे। मगही में समाजिक, ऐतिहासिक, परेम संबंधी, राजनीति संबंधी, पुरान संबंधी नाटक लिखल गेल।

नाटक के तत्व हे-कथावस्तु। मगही में दू किसिम के नाटक लिखल गेल-अनुदित आउ नइका। नाटक में कथा-वस्तु के परसार मनमाना ढंग से संभव न हे। नाटक जथाजोग छोटगर होवे के चाही। ओकर अभिनय में एत्ता जादे समय न देल जाय कि देखताहर ऊब के भाग खड़ा होवथ। नाटककार अप्पन काम के खास-खास बात चुन लेथ, जे जरूरी न हे ओकरा छोड़ल जाय। बढ़िया नाटककार खाली ओही सब घटना ओगैरह के दिरिस प्रस्तुत करऽ हे जे जादे जरूरी हे। कथावस्तु के दिरीस आउ सूत्र दू भाग में बाँटल गेल हे। वस्तु भी अधिकारिक आउ प्रासंगिक होवऽ हे। मूल कथा के अधिकारिक आउ गौन कथा के प्रासंगिक कहल जा हे। प्रासंगिक कथावस्तु अधिकारिक कथावस्तु के सुत्थरइ बढ़ावे आउ मूल काम इया व्यापार के विकास में

सहजोग दे हे। प्रासंगिक कथावस्तु के भी 'पताका' आउ 'प्रकरी' दूगो भेद मानल जा हे। जब कथावस्तु बराबर चलऽ हे तब ओकरा 'पताका' कहल जा हे आउ जब तनिए देर चल के रूक जा हे तब ओकरा 'प्रकरी' कहल जा हे।

नाटक में नाट्य के परधानता होवऽ हे, ई लेल ओह में चरित्र चितरन के खास महत्व देवे के जरूरत न हे। चरित्र चितरन नाटक के जादे परधान आउ स्थायी तत्व हे। चरित्र से ही पात्र के विचार आउ भाव के विकास दरसावल जा हे। चरित्र चितरन भी तनी छोटगरे होवे के चाही। नाटककार के खुद अप्पन कथावस्तु आउ संवाद से ही ई बात दिखला लेवे के चाही कि कउन पात्र के रंग–ढंग कइसन हे। नाटक में सब्भे चरित्र चितरन के एकलौता अधार अभिनयात्मक होवऽ हे। सुभाव भेद से नाटक चार किसिम के होवऽ हे—सांत, ललित, उदात्त आउ उद्धत। ई चारो में भी चार ठो उपभेद हे–अनुकूल, दक्खिन, सठ आउ धीठ। नायक के घरनी नायिका कहला हे। दिव्या, नृपतिनी, कुल–स्त्री आउ गनिका चार गो भेद आचार्य भरत नायिका के मानलन हे। एकर अलावे व्यवहार आउ दसा भेद के मोताबिक नायिका के आठ गो भेद हे—स्वाधीन पतिका, वासकसज्जा, विरहोत्कंठिता, खंडिता, कलहांतरिता, विप्रलब्धा, प्रोसितपतिका आउ अभिसारिका। नाटक में संवाद इया कथोपकथन में पात्र के भीतरी आउ महीन से महीन बात समझे में मदद मिलऽ हे। पात्र के भाव, विचार' परवीरती ओगैरह के विकास आउ रुकावट के पता हमरा कथोपकथने से चलऽ हे। कुछ अइसनो नाटक होवऽ हे जेह में मनोविज्ञान के सिद्धांत पर जादे धेयान दे के चरित्र चितरन कैल जा हे। कथोपकथन से दू किसिम के चरित्र चितरन होवऽ हे। एगो तऽ कुछ पात्र आपस के कथोपकथन से ओकर चरित्र बतावऽ हथ आउ दोसर जब कोई पात्र दोसर पात्र के बरनन करऽ हे तऽ ओकरो ओकर चरित्र के ग्यान हो जा हे। नाटक में एगो तत्व हे उद्देस्य इया मकसद। काव्य के समाज हित ला जे संबंध हे ओही नाटक में सबसे जादे साफ लउकऽ हे। एकरा में केकरो आपत्ति न होवे के चाही कि जउन समाज जेत्ते उन्नत होयत ओकर रंगसाला भी ओतने उन्नत मानल जात। रंगमंच पर जे सिरजन हमारा लउकऽ हे ओकर सिरजनहार नाटककारे होवऽ हथ। ई लेल ऊ सिरजन में नाटककार के भाव, विचार आउ आदर्स के होना जादे जरूरी आउ सोभाविक हे। ओकर सिरजल सिरजन से हमरा ई बात के पता चल जा हे कि ऊ दुनिया के कउन नजरिया से ताकऽ हथ आउ उनकर नैतिक आदर्स के महातम का हे? जीवन के जे भी अर्थ उनखा समझ में आवऽ हे

ओही अर्थ ऊ अप्पन रचना के मारफत लोगन के समझावे ला कोसिस करऽ हथ। सैली आउ भासा भी नाटक के सुत्थरइ बढ़ावऽ हे।

भिखारी ठाकुर के बिदेसिया आउ बंगाल के 'जतरा पार्टी' के पहिले से ही मगही में सोरठी-बिरजभार, रेसमा-चुहरमल, कुँवर-विजयी आदि नाटक धड़ल्ले से खेलल जाय लगल।

मगही के पहिला 'नाटक' चतुर्भुज मिश्र के लिखल 'अवधूत' हे। एकर छपाई 1883 ई० में भेल। एकर कुछ पात्र मगही में बोलऽ हे। एकर बाद गोपीचन्द गुप्त बड़गवे के लिखल 'माहुरी मंडल' के नाम आवऽ हे। एह में जातीय कुरीतियन के मिटावे आउ समाजिक सद्भाव बनावे ला विचार कैल गेल हे। संवत् 2013 में एगो क्रांतिकारी समाजिक नाटक 'नया गाँव' डॉ० श्रीकांत शास्त्री लिखलन। एकर परकासन पूर्णिमा विद्या मंदिर स्थान, पो० वरडीह (पटना) हे। ई नाटक में अनपढ़ आउ अछरकट्टु पात्र के मुँह से ठेठ मगही के परयोग मिलऽ हे, मुदा तनी पढ़ल गुनल लोग हिन्दी में बोलऽ हथ। एहमें नवजागरन के सनेस मिलऽ हे। मगही के अनूदित नाटक 1958 ई० के 'विहान' पत्रिका में छपल। बाद में अलग से 1960 ई० में एगो किताब बनावल गेल। खुद अनुवादक डॉ० रामनन्दन के कहनाम हे—''उनइस सौ संतावन में जब बिहार मगही मंडल के तरफ से 'मगध महोत्सव' मनावे के बात तय भेल तब ओकरा में एगो नाटक खेले के विचार कैल गेल, जेकरा में मगध के पुरान इतिहास आउ संस्कृति के झलक मिले। एकरा ला हम संस्कृत नाटक 'कौमुदी महोत्सव' के मगही में रूप बदलैन कइली''। बाबूलाल मधुकर के 'नयका भोर' 1967 ई० में छपल। एहमें छुआछूत आउ मजूर के समस्या उकेरल गेल हे।

भोजपुरी नाटक 'लोहा सिंह' (रामेश्वर सिंह कश्यप) के समकच्छ शत्रुघ्न राजीपुरी के लिखल मगही नाटक 'भरल कोठी धान' अकासवानी पटना से पुरजोर ढंग से परसारित भेल।

एकर बाद हरिनंदन मिश्र 'किसलय' के लिखल 'अप्पन गाँव' नाटक 1973 ई० में छपल। ई नाटक में भारतीय गाँव के खुसहाल बनावे ला हर संभव उपाय पर बल देल गेल हल। आपसी कलह, इरखा से दूर रह के विकास के काम में जुटे के सनेस हल। रघुवीर प्रसाद समदर्शी के पौरानिक नाटक 'भस्मासुर' 1979 ई० में छप्पल। ई एगो पौरानिक आउ ऐतिहासिक नाटक हल। 1920 ई० में श्री रामाधार

सिंह आधार' के 'शकुन्तला' नाटक छप्पल। ई भी कालिदास के लिखल नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' के अनुवादे हे। डॉ० रामनरेश मिश्र 'हंस' के 'सुजाता' नाटक 1982 ई० में छप्पल। 1984 ई० बाबू राम सिंह लमगोड़ा के नाटक 'कोशा' छप्पल। ऐतिहासिक पात्र 'कोशा' पर आधारित ई नाटक में लोकजीवन के मँहक हे। एकर अलावे 'बुज्झल दीया के मट्टी', 'गंधारी के सराप' 'बनत बनत बन जाए' भी लमगोड़ा जी के छप्पल नाटक हे। राजनीतिक व्यंग से भरल-पूरल नाटक 'बदलाव' प्रो० अलखदेव प्रसाद अचल के हे। एकर छपाई 1990 ई० में भेल। सतीश कुमार मिश्र के अनछपल नाटक 'चभक्का सिंह', 'जैहिन्द' राष्ट्रीय आउ सांस्कृतिक संचेतना के उद्भावक हे। 1992 में राजेन्द्र कुमार यौधेय रचित 'गीति-नाट्य' मानिनी शकुंतला परकासित भेल। डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य के लिखल आउ 1993 ई० में छप्पल 'पांड़े जी के पतरा' आउ 1994 ई० में छप्पल 'प्रेम अइसने होवऽ हे' एगो सफल नाटक हे। सूर्यनारायण शर्मा के नाटक 'आग में पानी' आउ 'पानी में आग' अनछप्पल नाटक हे। प्रो० दिलीप कुमार के 'बदलल समाज', श्री केशव प्रसाद वर्मा के 'कन्हैया के दरद', हरीन्द्र विद्यार्थी के 'कुर्सी', 'आधी अबादी' आदि परकास में आयल, मंचन भी भेल।

सुमन्त के लिखल 'नरक जिनगी' आउ 'फुलवा' समाजिक नाटक हे। समाजिक नाटक में श्री सिद्धनाथ शर्मा के 'भउजी' आउ 'भगवान इंसाफ तोरे हाथ में' परकास में आयल। श्री विश्वनाथ मिश्र 'पंचानन' के 'गिरइत भित्ति उठइत भित्ति', श्री सच्चिदानंद प्रसाद के 'पढ़ल पुजारी अनपढ़ जजमान', डॉ० भरत सिंह के 'यौगंधनारायन', दामोदर प्रसाद के 'उतरा', राजदेव प्रसाद के 'अंधरचटकी', वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज के 'टूटल मड़ई' से मगही नाटक के खजाना भरल।

मगही नाटक साहित्य में ऐतिहासकि नाटक के सुरुआत डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह 'सुमन' के द्वारा होल। मगही अकादमी, पटना, बिहार सरकार के तत्कालीन अध्यक्ष श्री राम गोपाल शर्मा रुद्र के कहला पर ई ऐतिहासिक नाटक 'अँचरवा के लाज' लिखलन जेकर परकासन अकादमी द्वारा कैल गेल। एकरा में रास्ट्रीय चेतना आउ देसभक्ति के भावना भरल हे। तेयाग आउ बलिदान के एकरा मे नीमन चित्र खींचल गेल हे। इनकर दोसर नाटक 'लोगवां का कही' भी ऐतिहासिक नाटक हे जे प्रेस में छप रहल हे।